'kks/k lkjka'k

vkfnoklh;ksa ds mRFkku esa yksdfcjknjh izdYi dk ;ksxnku

प्रस्तुत षोध का विशय ''आदिवासीयों के उत्थान में लोकबिरादरी प्रकल्प का योगदान'' है। प्रकाष आमटे का जन्म 26 दिसंबर 1948 में महाराश्ट्र के चंद्रपूर जिले के आनंदवन गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम मुरलीधर देविदास आमटे था। इनका जीवन धनवान परिवार में बीता। ये चिकित्सक तथा सामाजिक कार्यकर्ता है। महारोगी सेवा समिती, वरोरा द्वारा लोगबिरादरी प्रकल्प की षुरूवात 23 दिसंबर 1973 में जेश्ठ समाजसेवक स्व. बाबा साहेब आमटे ने महाराश्ट्र के गड़चिरोली जिले में भामरागढ़ तहसील के हेमलकसा इस ग्राम आदिवासी समुदाय में से अति पिछड़ा जमात माने जाने वाली माड़िया गोंड नामक कि जमात इनका सर्वांगिण विकास के लिए लोकबिरादरी परियोजना स्थापित किया है। यह प्रकल्प स्थापित करने के बाद आदिवासी लोगों के वास्तविक जीवन में बदलाव आया है। आदिवासीयों का स्वास्थ तथा षिक्षा की आवष्यकताओं के लिए लोकबिरादरी प्रकल्प प्रकाष के पिता बाबा आमटे ने खोला हुआ था। ताकि आदिवासी समुदाय की गंभीर स्थिती में सुधार आ सके। प्रकाष आमटे ने अपने प्रकल्प में वन्यजीव सरंक्षण के लिए अनाथालय आश्रम बनाया ताकि वन्यजीव सुरक्षित रहें, वह निसर्ग प्रेमी है।

अतः इस षोध–सारांष में प्रकाष आमटे के लोकबिरादरी परियोजना का कार्य आदिवासी समुदाय के प्रति रूपरेखा खींची गई है। उन आधारों पर प्राथमिक और द्वितीयक ग्रन्थों से गुणात्मक और विष्लेशणात्मक अध्ययन किया गया है।

Summary

"Contribution of Lokbiradari Project in the uplift Tribal's"

The thesis of the research done is the contribution of the tribal people to the development of the tribal people. Prakash Amte was born on December 26, 1948 in Anandvan village in Chandrapur district of Maharashtra, whose father's name was Murlidhar Devidas Amte, he lived his life rich. Activists are the inauguration of the Lokbiradari Project by Maharogi Seva Samiti, Varora on December 23, 1973.

Baba Amte has established a philanthropic project for the all round development of madia gond, considered to be the most backward village of the village tribal community in Gadchiroli district of Maharashtra, After the establishment of this project, the real life of tribal people has changed. Baba Amte, father of public works, Prakash's father Baba Amte had opened the need for the health and education needs of the tribal's, so that the serious situation of the tribal community could be improved. Amte made the orphanage ashram for wildlife conservation, the nature lover.

Hence: In this research I have drown the profile of Prakash Amte's Philanthropic Project, the tribal community, on which basis has studied qualitative and analysis from primary and secondary texts.